IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वस्त्र छपाई कला में छीपा समाज की भूमिका

अनिता नागर (जुनियर रिसर्च फैलो)
इतिहास विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर

अगर औजार को शिल्पकार के व्यक्तित्व का विस्तार माने तो
वस्त्र मनुष्य के कल्पनालोक की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है।

सारांश :

कछवाहा वंश के राजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने जय नगर केनाम से जयपुर नगर की स्थापना 18 नवंबर 1727 को की। अमरिकी ट्रेवल प्लस सीजर ने एशिया के दस श्रेष्ठ नगरों में सम्मिलित किया है। सवाई जयसिंह द्वितीय ने जयपुर के सबसे बड़े एवं भव्य विशाल भवन सिटी पैलेस अर्थात् नगर प्रासाद का निर्माण करवाया एवं इसमें छत्तीस कारखाने स्थापित करवाए। जिनमें चार वस्त्रों से सम्बद्ध थे, जैसे सीवन खाना, रंग खाना और छापाखाना और कपड़दार जयपुर के ही कारखाने, जात अभिलेखों में ना जाने कितने ही छीपों और रंगरेजों के नाम सुरक्षित है। यहाँ की वस्त्र छपाई कला विश्व विख्यात है। यहाँ की छपी मलमल और छींट पूरे भारत में प्रसिद्ध थी जिसकी छपाई का श्रेय छीपा (जाति विशेष) समुदाय को दिया जाता है। महाराजा जयसिंह द्वितीय ने इन्हें राजकीय संरक्षण दिया तो इनकी कला को पंख लगे और छीपाओं द्वारा रंगे छपे वस्त्रों का राजसी आदान–प्रदान हुआ इसकी जानकारी दस्तुर अल अमल की सन् 1703 की रिपोर्ट से होती है जिससे छपे कपड़ों पर लगे करों की विस्तृत सूची मिली है। छीपा मूलतः क्षत्रिय थे (वर्ण) किंतु रंगाई, छपाई, सिलाई, बंधाई इनका कर्म था और जन्म के आधार पर जाति बन जाने से ये छीपा, दर्जी, रंगरेज जाति के हो गए।

मूल बीज : छपाई परिधान, जयपुर राजघराना, छीपा समाज, भौगोलिक संकेत, राष्ट्र पति पुरस्कार, जी–20 समिट।

परिचय

वस्त्रों के ऊपर निश्चित पैटर्न या डिजाइन के अनुसार रंग चढ़ाने की प्रक्रिया को वस्त्रों की छपाई कहते हैं। छपाई में रंग–सूत के साथ एकाकार हो जाता है जिससे धुलने पर छूटता नहीं। भारत के राजस्थान की राजधानी जयपुर की वस्त्र छपाई कला पूरे विश्वभर में विख्यात है। यहाँ के सांगानेर व बगरू की ठप्पा छपाई कला को ख्याति दिलाने में नामदेव छीपा समाज का अतुलनीय योगदान है जिनका संबंध जयपुर के संस्थापक सवाई जयसिंह द्वितीय के राजघराने से रहा है। राजकीय संरक्षण मिलने से छीपा समा की छपाई ने राजसी व्यवहार को आगे बढ़ाया और इनके छपे वस्त्र (पगड़ी, पौशाक) दूसरे राज्यों में आदान–प्रदान हुए जिससे जयपुर की वस्त्र कला अधिक निखरी। यह वस्त्र छपाई कला तब से आज तक निरंतर बढ़ रहीहै जिसका परिणाम तीतानवाला म्युजियम बगरू में कपड़ा मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी द्वार किए गए उद्घाटन में देखने को मिला एवं श्रीराम किशोर जी छीपा को छपाई कला में पद्म श्री सम्मान एवं राष्ट्रपति पुरस्कार से नवाजा गया। रंगाई–छपाई की इस प्राचीन हस्त कला को विश्वभर में विख्यात करने हेतु छीपा समाज के साथ–साथ वर्तमान में ना केवल राज्य सरकार अपितु आजादी के अमृत महोत्सव के तहत मिनिस्ट्री ऑफ टेक्सटाइल डिपार्टमेंट दिल्ली भारत सरकार भी प्रयासरत है।

उद्देश्य :

1. जयपुर राजघराने में छीपा समाज का अध्ययन।
2. वस्त्र छपाई में छीपा समाज का योगदान।

महत्त्व :

वस्त्र छपाई का कार्य जहाँ पूरे भारत में सामाजिक परम्पराओं के अनुरूप होता रहा है व राजस्थान के राजघरानों ने इसे राजकीय अवसर भी प्रदान किए है। इसी प्रकार अन्य संस्कृतियों के आकर जुड़ने से इन परम्पराओं की तस्वीर भी कई जगह बदलती नजर आती है। जयपुर की रंगाई एवं छपाई कला इसका ज्वलन्त उदाहरण है। प्रस्तुत शोध पत्र में छीपा समाज का जयपुर राजघराने में वस्त्र छपाई कला में योगदान एवं वस्त्र छपाई में छीपा समाज की भूमिका देखने को मिली। जो अग्रलिखित है –

छीपा समाज का जयपुर राजघराने में योगदान :

भारतवर्ष के रंग–रंगीले राजस्थान की राजधानी जयपुर की पहचान विभिन्न क्षेत्रों में अद्वितीय है। यहाँ की ऐतिहासिक इमारतें और शानदार विरासत विश्वभर में मौजूद लाखों विदेशी सैलानियों को अपनी ओर खींचती है। यहाँ के रंग–बिरंगे परिधान और शानदार वेशभूषा देशी ठाट के साथ यह अपने आप में एक स्वर्णिम इतिहास के एक शानदार अध्याय को समेटे हुए है। सवाई जयसिंह द्वितीय के काल में यहाँ पर छपाई का कार्य प्रारंभ हुआ। इसके समय ही सांगानेर, बगरू में छपाई कार्य शुरू हुआ। यहाँ की मलमल और सूती छींट भारत भर में प्रसिद्ध होने लगी। भारतीय सूती रंगे एवं छपे वस्त्रों का निर्यात ईसा पूर्व से ही विदेशों को होता था प्राचीन

साहित्य महावग्ग, पाणिनी की अष्टाध्यायी, मनुस्मृति आदि से स्पष्ट है कि उस समय रंगाई–छपाई कला विकसित थी। जयपुर के महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय संग्रहालय में सूती कपड़ों का विशाल संग्रहालय है।

सूती कपड़े को कपड़द्वारा में संचित किय गया है जिसमें चार भाग है – कि किराखाना, जारगरखाना, तोसाखाना और खजाना बहेला। यह राजकीय पोशाकों तथा आभूषाणों का खजाना था। इसी संग्रहालय में हमें जयपुर के बने अनेक वस्त्र देखने को मिलते हैं जो बहुत ही सुंदर तथा आकर्षक है। लाल रंग से चुनड़ी के तरह की छपाई मिलती है। यहाँ मिले घाघरे पर काले रंग की जमीन पर लाल और पीले रंग की छपाई की गई है। ये 18वीं सदी के मध्य के कण्डे हैं। यहाँ के बने वस्त्र भारतीय संग्रहालय में भी बहुतायत मात्रा में सुरक्षित है। यहाँ पर शताब्दियों पूर्व से छपाई का कार्य होता जा रहा है। इसका विस्तृत उल्लेख मुझे राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर में सुरक्षित रेकार्ड से मिलता है। उस समय जमाखर्च छापाखाना में वर्तमान समय की छपाई के मूल्य तथा प्रयुक्त सामग्री का विस्तृत विवरण मिलता है। इसके अंतर्गत प्रयुक्त सामग्री की खरीद तथा छीपों को उनकी मजदूरी का भी उल्लेख मिलता है।

रंगाई तथा छपाई के लिए राज्य की तरफ से बहुत अधिक मात्रा में वस्त्र दिए जाते थे। ये एक तरह से पुश्तैनी धंधा होता था। विशेष अवसरों जैसे – घुड़चढ़ी (विवाह के अवसर पर निकासी), विवाह, तीज, त्योहार के समय थान के थान रंगाई तथा छपाई के लिए सांगानेर भेजे जाते थे। क्योंकि उस समय सांगानेर के छीपे छपाई हेतु प्रसिद्ध थे और उनका हिसाब–किताब राजकीय बही में लिखा जाता था।

यथा – किरकिराखाना के तहसीलदार जसकरण जी से 203 थान मिले 2 रूपये साढ़े चौदह आना भाव से। जमा रंगीनथान, 55, चीरा रंगीस थान 5, आलम रंगीन थान 1, फैटा रंगीन थान 1, साड़ी रंगीन थान 20, ओढ़नी रंगीन थान 46, इजार रंगीन थान 50, घाघरा रंगीन थान 18, जामावार पसमी थान 5, छोटा छींट सादा थान 2 आदि।

सवाई जयपुर के तहसीलदार कालूराम जी को 188 रूपये 1 आना छपाई के लिए दिया गया। आसकरण खचांची से खजूर का 983 रूपये 10 आना मिला। उसमें से छपाई के लिए 700 रूपये जमा किये। सांगानेर के हाकिम के लिए बना उसके लिए 115 रूपये 10 आना और छाजू राम जलानी का उदयपुर से छप कर आया इसके लिए 168 रूपये दिये। सरेस का प्रयोग छपाई में होता था। मसनद खाना की दो खोली किस्तूरी से छपाई व्यास फकीर दास के द्वारा उसमें 1 रूपये लगा। कस्तूरी, गुलाब सोदाखाना में आयी छीपा को छपाई का 1 रूपया दिया।

इसी तरह के सांगानेर बगरू के छीपो द्वारा छपे वस्त्र अनेक संग्रहालय में सुरक्षित है जो जयपुर की छाप दूसरे राज्यों में भी छोड़ते है जो उनके आपसी राजसी व्यवहार को भी दर्शाती है। जयपुर के कपड़ों की देशविदेशों में आज भी पर्याप्त मांग है। राजस्थान के लोकगीतों में भी यहाँ के वस्त्रों का प्रायः उल्लेख मिलता है। जैसे –

इन लहरिया रा नौ सौ रूपया रोकड़ा सा

म्हाने ल्याई द्यो ढोला लहरियो सा।

चम–चम चमके चूनड़ी बिणजारो रै
कोई छोड़ो सो म्हारे कानी झाँक रै बिणजारा रै।

इसके अलावा यहाँ के छीपों द्वारा छपे वस्त्र केलिको संग्रहालय (अहमदाबाद), भारत कला भवन (बनारस), प्रिंस ऑफ वेल्स म्युजियम (बंबई), राजकीय संग्रहालय (जयपुर), भारतीय संग्रहालय (कलकत्ता), राष्ट्रीय संग्रहालय (दिल्ली) तथा महाराजा जोधपुर के संग्रहालय में सुरक्षित है। इनमें कुछ पर 'सवाई जैपुर' की मुहर हे। कुछ में कारीगर के नाम भी लिखे है। कुछ पर संवत् 1922, 1936 या 1919 आदि स्पष्ट रूप से छपा है।

कपड़ा छपाई में छीपा समाज का योगदान

प्राचीन भारतीय ग्रंथों में चित्रलेखा चित्रांगदा रंगशाला आदि शब्द सूचित करते है कि अलंकारिता की दृष्टि से रंगों का प्रयोग भारत में अत्यंत पुराना है। वस्त्रों की बुनाई करते समय रंगीन सूत द्वारा नाना प्रकार के रंग–बिरंगे चित्र बनाए जाते थे। इसके बाद उसे छपाई द्वारा अनेक चित्र छापे जाते। यह छपाई का कार्य एक जाति विशेष छीपा जाति द्वारा किया जाता है। छीपा शब्द का इतिहास उतना ही पुराना है जितनी रंगाई, छपाई, चुंदरी, बंधेज आदि का व्यवसाय। छपाई का संबंध सिंधु घाटी सभ्यता से ही पाया जाता है। जब से छपाई तथा छपे हुए कपड़े के व्यापार का धंधा छीपा जाति ने अपनाया तब से यह समस्त भारतवर्ष के साथ ही साथ बारह विदेशों में भी फलने–फूलने लगा। यही कारण है कि कपड़े की छपाई तथा उसके व्यापार से संबंधित जाति के रूप में छीपा समाज को प्राचीन तथा मध्यकाल तक प्रायः सभी राज्यों, गणराज्यों तथा बस्तियों में जाना गया और आदर सम्मान के साथ बसाया गया।

छीपा समाज ने अपनी मेहनत, लगन, श्रमनिष्ठा से अपने कर्म के प्रति कर्त्तव्य निभाया। यही वजह है कि आज छीपा समाज के बहुत प्रतिष्ठित व्यक्तियों के कपड़ा छपाई में नए–नए आयाम प्राप्त कर राष्ट्रपति पुरस्कार, पद्मश्री व राज्यपाल पुरस्कार प्राप्त कर समाज का गौरव बढ़ाया है। जैसे –पद्म श्री, भारत सरकार द्वारा आम तौर पर कला, शिक्षा, उद्योग, साहित्य, विज्ञान, खेल, चिकित्सा, समाज सेवा और सार्वजनिक जवन में विशिष्ट योगदान को मान्यता प्रदान करने के लिए दिया जाता है। श्री लाल जोशी, भीलवाड़ा, राजस्थान को फड़चित्रकारी (कला) के क्षेत्र में राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने पद्म श्री सम्मान प्रदान किया। श्री लाल जी ने फड़ चित्रकारी देश में ही नहीं अपितु विदेश में भी अपनी अमिट छाप छोड़ी है। इन्हें 2005 में राष्ट्रपति ने शिल्पगुरू पुरस्कार व 1984 में ये राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित हुए। श्रीराम किशोर छीपा (डेरेवाला) को छपाई कला से जुड़े दस्तकारों में 2009 में श्रीमती प्रतिभा पाटिल ने पद्मश्री सम्मान व बाद में राष्ट्रपति पुरस्कार से नवाजा गया।

छपाई कला के क्षेत्र में राजस्थान के कई बंधुओं को राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त हुआ है। जैसे – स्व. श्री राधा मोहन उदयवाल सांगानेर (राष्ट्रपति पुरस्कार), स्व. श्री राम गुलाम छीपा, स्व. श्री रामस्वरूप कोठिवाल, बगरू श्री लालचंद डेरेवाला बगरू, श्री दिगंबर मेड़तवाल बगरू, श्री अवधेश कुमार पांडे, सांगानेर, श्री बृज वल्लभ

उदयपुर, सांगानेर, श्री कुंज बिहारी सोनावा सांगानेर, श्री संतोष धनोपिया, श्री मुकेश धनोपिया सांगानेर, श्रीमती भंवरी देवी बगरू, श्री भैरूलाल छीपा आकोला उपरोक्त सभी राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित।

निष्कर्ष :

छीपा समाज ने राजकीय सेवा कर तात्कालिक राजसी व्यवहार को बनाए रखने में मदद की जिनकी छाप आज के अन्य पड़ौसी राजघरानो के राजकीय संग्रहालयों में देखने को मिलती है एवं आज के परिप्रेक्ष्य में जयपुर के सांगानेर व बगरू की छपाई को मिला ऐतिहासिक भौगोलिक संकेत (GI Tag) छीपा समाज के लंबे सफर के परिश्रम को उजागर कर विश्व पटल पर एक नई पहचान दिलाता है। साथ हीराजस्थान के आर्थिक योगदान को भी दर्शाता है।

दिल्ली में आयोजि 10 सितम्बर 2023 को समारोह जी–20 समिट में श्री योगेश जी छीपा ने रंगाई–छपाई की इस प्राचीन हस्त कला को विश्वभर के राष्ट्राध्यक्षों के समक्ष लाइव प्रदर्शित कर अपने समाज व छपाई कला को अनन्य स्थान दिलाया। भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी ने भी इसे सराहा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर
2. मोहनलाल गुप्ता, संस्कृति के स्वर, राजस्थान प्रकाशन जयपुर, 1989
3. गुलाब कोठारी, राजस्थान की बहुरंगी वस्त्र परंपरा, जयपुर प्रिंटर्स, 1994
4. डॉ. आशा भगत, राजस्थान, गुजरात एवं मध्यप्रदेश की छपाई कला का सर्वेक्षण, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1995
5. रंगे एवं छपे वस्त्र (उत्तर भारतीय रंगाई एवं छपाई कला का एक अध्ययन) डॉ. देवकी आदिवासी, नई दिल्ली, 1976
6. गुलाब कोठारी, राजस्थान की रंगाई–छपाई, पत्रिका प्रकाशन, जयपुर, 2016
7. डॉ. आशा शर्मा, वस्त्र परिसज्जा कला, रगाई और छपाई दत्यिागंज, नई दिल्ली, 2012
8. सवाई मानसिंह द्वितीय संग्रहालय, जयपुर
9. अनोखी म्युजियम, जयपुर (आमेर)
10. केलिको संग्रहालय सांगानेर
11. पूर्णिमा गहलोत, लोकगीत (जयपुर 1971)